AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2021
Impact Factor:6.3
Subject: Humanities

महामना सूर्यकांत त्रिपाठी का साहित्य में योगदान

हरविंदर कौर
शोध छात्रा
प्रो. (डॉ) संजू झा
शोध निर्देशिका हिंदी विभाग
महाराज विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय , जयपुर

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER / ARTICLE, HEREBY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/ OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT/ OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE/UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION. FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR AT THE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE)

महामना सूर्यकांत त्रिपाठी का हिंदी जगत में अद्वितीय योगदान रहा है। निराला काव्य में भी भिक्षुक, विधवा, दीन तथा पत्थर तोड़ती स्त्री का चित्र साकार हो उठता है तथा जब राष्ट्रीयता की बात करते है तो 'जागो फिर एक बार', 'बादल–राग', 'महाराज शिवाजी का पत्र', 'भारती, जय, विजय करे', 'नाचे उस पर श्यामा' का भौरव राग सुनाई पड़ने लगता है। 'बहू' शीर्षक कविता में निराला ने भारतीय–बहू के सौन्दर्य शालीनता से प्रस्तुत किया –

''उसके खिले कुसुम–सम्भार
विपट के गर्वोन्नत वक्षः स्थल पर सुकुमार,
मोतियों की मानो है लड़ी
विजय के वीर हृदय पर पड़ी।''[1]
ओस–कण–सा पल्लवों से झर गया जो अश्रु, भारत का उसी से सर गया।''[2]

[1] निराला–अनामिका, पृ0सं0–130,

[2] निराला–अनामिका, पृ0सं0–132,

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2021
Impact Factor:6.3
Subject: Humanities

निराला प्रगतिशील कवि रहें है। विकासशील पेड़–पौधे और प्रगतिशील नदी–निर्झर पुष्ट और स्वच्छ रहते हैं। विकास और प्रगति ही पुष्ट, उज्जवल तथा सद्य जीवन का लक्षण है। मनुष्य और उसका जीवन पूर्णता की ओर बढ़ने के लिए है। युग से युग की कड़ी जुड़ कर विकास की श्रृंखला तैयार हो रही है। प्रकृति के विकारों को नष्ट करते हुए जीवन स्वच्छ बनाए रखना आवष्यक है। संघर्षात्मक विश्व में प्रत्येक युग की नई–नई परिस्थितियाँ और समस्याएँ उत्पन्न होती है, जो समाधान के लिए नये–नये साधनों और प्रयत्नों की अपेक्षा करती है। आज का ताजा ज्ञान कल बासी हो जाता है, आज का जीवन–आदर्श कल रूढ़ि हो जाता है, आज की तरल लहर कल बर्फ बन जाती है। प्रकृति के विकारों के कारण जड़ता, अन्धकार, पंक और कुहरा ही अधिक छाया रहता है। इस सब को तोड़–फोड़ कर आगे बढ़ने के लिए नये से नये ज्ञान और उससे निर्मित नवीनतम दृष्टिकोण की अपेक्षा होती है। इस ज्ञान और दृष्टिकोण से मनुष्य और संसार को सुख–शांति के एक सनातन सुनिश्चित ध्येय की ओर ले जाना ही वास्तविक प्रगति है। साहित्य जब इस चेतना से सम्पन्न होकर तैयार होता है तब वह प्रगतिवादी कहलाता है। उसमें नव–जीवन की शक्तियाँ गहरी किलकारी मारती हैं। जगत् और जीवन के वास्तविक तथ्यों के आधार पर हुई रसमयी भाव–सृष्टि ही सच्चा अन्तर–स्वास्थय और जीवन–दृष्टि प्रदान कर सकती है। केवल सुख–दुःख की रसमयी काव्याभिव्यक्ति तो आज की परिस्थितियों में वाग्विलास मात्र ही कहलायगी। प्राचीन और नवीन की भिड़न्त में जो लाखों समस्याएँ आज उठ खड़ी हुई हैं, उनके समाधान के लिए कवि को अब ललकार भरी चुनौती मिल रही है। संसार को सच्चे प्रगतिशील कवि की जितनी आवश्यकता आज है, शायद पहले कभी भी न रही हो !

नारी के त्यागमय प्रेम की एक निष्ठा का वर्णन कवि इस प्रकार करते है–

''यौवन–उपवन का पति बसन्त, है
वही प्रेम उसका अनन्त, है
वही प्रेम का एक अन्त।
खुलकर अति प्रिय नीरव भाषा

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2021
Impact Factor:6.3
Subject: Humanities

ठण्डी उस चितवन से
क्या जाने क्या कह जाती है
अपने जीवन–धन से ?''[3]

हाँ, तो प्रगति करनी है। पर इसके लिए प्रयोग आवश्यक है। प्रयोग–सिद्ध प्रगति प्रामाणिक और पुख्ता होती है। नये–नये प्रयोगों के बिना जीवन और साहित्य पर अचार की सी फूलन आ जाती है। वास्तविक विकास तो प्रयोगों के द्वारा ही होता है। जीवन का सारा मौलिक आनन्द प्रयोग करने वालों की सम्पत्ति है।

निराला जब प्रकृति के साहचर्य में होते है, तो 'जुही की कली', 'शेफालिका', 'नर्गिस', 'ठूँठ', 'खजोहरा', के सौन्दर्य भावना से युक्त होते है, तथा जब समाज में फैली विषमता तथा शोषण पर दृष्टिपात करते है, तब 'दगा की', 'थोड़ो के पेट में बहुतों को आना पड़ा', 'राजे ने अपनी रखवाली की', 'कुत्ता भौंकने लगा', 'झींगुर डटकर बोला', 'छलांग मारता चला गया', 'डिप्टी साहब आये', के साथ ही 'नये पत्ते' की समस्त कविताएँ शोषण को व्यक्त करती है। इस प्रकार निराला के काव्य में राष्ट्रवाद, मानवतावाद, वैश्विक चेतना, रूढि–जीवन के नैसर्गिक विकास के लिये समाज ने कुछ परम्पराओं को मान्यता दी। महामना निराला की कविता का योगदान एक व्यापक क्रिया है की प्रतिक्रिया है। उसकी एक दार्शनिक पृश्ठभूमि है और कुछ निश्चित सिद्धान्त हैं। पिछले पृष्ठों में, विशेषतः छायावाद के विवेचन में, यह यत्र–तत्र बताया जा चुका है कि प्रगतिवाद सूक्ष्म विरूद्ध स्थूल का विद्रोह है। बात यह है कि छायावाद में भाव और कल्पना की सूक्ष्मता अपनी अति को पहुँच गई, वस्तु का स्थान सूक्ष्म चेतना ने ले लिया। प्रकृति को इस अतिवाद के कारण पुनर्संतुलन स्थापित करना पड़ा– प्रगतिवाद के रूप में। आरंभ में प्रगतिवाद व्यापक जीवन–प्रगति के सिद्धान्त के रूप में उतना नहीं था, जितना एक राजनीतिक वाद या सिद्धान्त के साहित्यिक संस्करण के रूप में। जर्मनी के प्रसिद्ध समाजशास्त्री दार्शनिक कार्ल मार्क्स ने मानव के दुःख–दैन्य का व्यापक विश्लेषण करके यह तथ्य स्थिर किया कि आर्थिक शोषण और वैषम्य ही मनुष्य के समस्त रोगों की जड़ है। इस सिद्धान्त से तथाकथित

[3]निराला–तुलसीदास, पृ0सं0– पृ0 111, संस्करण 1994, भारती भण्डार, इलाहाबाद।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2021
Impact Factor:6.3
Subject: Humanities

'प्रगतिवाद' का बहुत गहरा संबध है। प्रगतिवादी काव्यधारा में निरूपित प्रेम–सौंदर्य की प्रवृत्तियों के स्वरूप का निर्धारण बहुत कुछ यही विचारधारा करती है। प्रगतिवाद के विचारकों ने प्रगतिवाद की अनेक विशेषताएँ बताई हैं।[4]प्रगतिवाद डार्विन के 'सुयोग्यतम ही जीते हैं' के सिद्धान्तानुसार जीवन को अविराम संघर्ष का पर्याय मानता है। उसकी दृष्टि में आत्मा, आनन्द, रस या शांति जैसे शब्दों का कोई महत्त्व नहीं। वह पूँजीपतियों एवं सामन्त वर्गों को समाप्त करने के लिए हिंसा, रक्तक्रांति व युद्ध आदि की भावनाओं को भड़काता है। मन या आत्मा भी उसकी दृष्टि में भौतिक द्रव्य ही है। वह जीवन या मानव–समाज की केवल अर्थपरक व्याख्या ही प्रस्तुत करता है।

वह किसान–मजदूरों तथा फैक्टरी–कारखानों के श्रमजीवियों के प्रति ही अपना प्रेम व सहानुभूति सीमित रखता है, और उनकी विशमताओं, पीड़ाओं, अभावों व कष्ट–क्रंदनों को ही वाणी देता है। रोटी को वह जीवन की सबसे बड़ी समस्या मानता है। हँसिया, हथौड़ा, रूस, लैनिन, लाल सेना, मास्को व लैनिनवाद आदि शब्दों के प्रयोग से वह साम्यवाद के ही साथ अपना सांस्कृतिक संबंध जताता है। वह धर्म, आत्मा, ईश्वर जैसे नामों या शब्दों से घृणा करता है। उसकी दृष्टि में धर्म ढोंग है और ईश्वर धोखा। कला व संस्कृति (सामन्ती) केवल विलास है। इन सब के प्रति प्रेम या श्रद्धा को वह बुर्जआ मनोवृत्ति, पलायन या प्रतिक्रिया कहता है। वह नैतिक संयम या सदाचार को अस्वाभाविक आत्मदमन तथा आत्मशोषण कहता है। इतना ही नहीं वह काम या वासना को भूख की ही तरह प्राकृतिक वस्तु मानकर उसके नग्न चित्रण को भी अनुचित नहीं समझता। मोटे रूप में यही उसकी विचारधारा का मूल आधार समझा जाता है।

'सरोज स्मृति' में निराला ने अपनी पुत्री 'सरोज' के यौवन का वर्णन करने का जो साहसिक कार्य किया है, वह सम्पूर्ण विश्व साहित्य में दुर्लभ है। पुत्री सरोज का सौन्दर्य इन पंक्तियों में चित्रित है –

[4]दे0 – डॉ0 नगेन्द्र–कृत 'आधुनिक हिन्दी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ' में 'प्रगतिवाद' नामक लेख, पृ0 99 से 101 तक। श्री कन्हैयालाल सहल–कृत 'आलोचना के पथ पर' में 'द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद' नामक लेख भी दृष्टव्य है।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2021
Impact Factor:6.3
Subject: Humanities

''उमड़ता ऊर्ध्व को कल सलील जल
टलमल करता नील–नील,
पर बँधा देह के दिव्य बाँध,
छलकता दृगों से साध–साध।''[5]
''गुरू हथौड़ा हाथ,करती बार–बार प्रहार–
सामने तरू मालिका,अट्टालिका,प्राकार।''[6]

जीवन के कँकरीले–कँटीले पथों पर भी प्रणय की अनादि भावना मन को तरंगित करती रहती है। आँधी–पानी के इस युग में भी प्रणय की धारा प्रवाहित होती रही। संयोग और वियोग दोनों का वर्णन हुआ। पहले संयोग वर्णन को लें।

क. संयोग वर्णन – रस–निरूपण में दो पक्ष होते हैं–(1) विभाव पक्ष और भाव पक्ष। आलंबन का बाह्य रूप सौंदर्य–वर्णन, जो विभाव पक्ष के अंतर्गत होता है, आगे किया जाएगा। यहाँ भाव–पक्ष पर विचार किया जाय। भाव अगणित होते हैं। सुविधा के लिए साहित्य–षास्त्रियों ने उन्हें अनेक स्थायी–संचारी भावों के रूप में वर्गीकृत कर दिया है।

संयोग–वर्णन में व्रीड़ा, चपलता, हर्श, गर्व आदि संचारियों का विषेश स्थान है। मानव या समाज के प्रति जो प्रेम प्रकट हुआ है, वह कहीं तो केवल बौद्धिक जान पड़ता है और कहीं वह कवि के रागात्मक हृदय का पारिचायक है। कोरे मॉस्को, लेनिन, लाल सेना आदि नामों के लेबिल से आतंकित करने वाली सोडावॉटरी जोष वाली साम्प्रदायिक कविताओं की अपेक्षा 'निराला' की 'तोड़ती पत्थर' जैसी कविताएँ दोनों के प्रति कवि–हृदय की सच्ची व मार्मिक वेदना की प्रकाशक है–

वह तोड़ती पत्थर ;
देखा मैनें उसे इलाहाबाद के पथ पर;
वह तोड़ती पत्थर ..... ।

[5]निराला–परिमल,पृ0स0–86,संस्करण1997,राजकमल प्रकाशन नई,दिल्ली।.
[6]निराला–परिमल,पृ0स0–103,संस्करण1997,राजकमल प्रकाशन नई,दिल्ली।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2021
Impact Factor:6.3
Subject: Humanities

गुरू हथौड़ा हाथ,
करती बार बार प्रहार;
देखा मुझे उस दृश्टि से,
जो मार खा रोई नहीं;
एक छन के बाद वह काँपी सुधर,
ढुलक माथे से गिरे सीकर;
लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा,
''मैं तोड़ती पत्थर।''[7]

अतः विरही, प्रिय के नाते, प्रकृति को हरी–भरी तथा आनंदमय देखना चाहता है। यह कामना साधारण कामीजनों की न होकर गंभीर तथा एकनिष्ठ प्रेमियों की वृत्ति है। उर्मिला का हृदय विरह–ज्वाला में जल कर इतना उदात्त तथा निर्मल हो गया है कि वह जड़ प्रकृति को भी सुखी देखना चाहती है।

''मरूत–प्रवाह, कुसुम–तरू फूले,
बौर–बौर पर भौंरे भूले,
पात–गात के प्रमुदित झूले,
छायी सुरभि चतुर्दिक उत्तम।''[8]

छायावादी काव्य में हिन्दी–कवि ने उस पूर्णता को सूक्ष्मता व एकांतिक आदर्ष–प्रेम में खोजना चाहा, किंतु वह उसमें पूर्णतः प्राप्त न हुई। ''छायावाद में षाष्वत तथा उदात्त का स्थान रहस्य ने ले लिया; वस्तु–जगत् का स्थान भाव–जगत् और सार्वलौकिकता का स्थान वैयक्तिकता ने ग्रहण कर लिया। उसने वास्तविकता की उपेक्षा कर स्वप्न तथा आशा की सृष्टि की और कल्पना का सौंदर्य–पट बुना।''[9] अतः छायावाद पूर्ण जीवनोपयोगी न रहा। वास्तव में वस्तु व चेतना के मधुर सामंजस्य में ही जीवन की पूर्णता है। चेतना के साथ ही काव्य में वस्तु–तत्व भी आवश्यक है। जान–बूझ कर वस्तु–तत्व की उपेक्षा करने से प्रकृति को स्वयं ही संतुलन

[7] ''अपरा'' की 'तोड़ती पत्थर' नामक कविता।
[8]. निराला–गीतिका, पृ0सं0–10
[9] इलाहाबाद रेडियो से प्रसारित श्री सुमित्रानंदन पंत का 'प्रयोगषील कविता' नामक परिसंवाद ('प्रतीक', जून सन् 1951, से उद्धृत।)

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2021
Impact Factor:6.3
Subject: Humanities

लाना पड़ता है। और अंत में ऐसा ही हुआ। विश्व, देश और काल की व्यापक और नवीन परिस्थितियों के घात–प्रतिघात–प्रभाव में छायावाद को भी इस जीवन तथ्य की ओर जाना पड़ा। इधर भौतिकतावादी जीवन–दर्शनों का अधिकाधिक उत्कर्ष हुआ, जिसने कवियों को कल्पना की सुनहली स्वर्गगा से घोर यर्थाथ की पथरीली भूमि पर ला पटका। बीसवीं षताब्दी की वैज्ञानिक उन्नति ने मानव–चिंतन को बड़ी प्रबलता से मथ दिया। परम्परागत भावुकता व रोमानी कल्पनात्मकता का स्थान अब वस्तु–सत्य व बौद्धिकता को देना पड़ा। मानव–जीवन का सारा ढाँचा झकझोर दिया गया। परिणाम–स्वरूप जगत् व जीवन संबंधी अगणित नवीन समस्याएँ समाधान के लिए मुँह फाड़े सामने आ खड़ी हुई। इसके लिए मानव–जीवन और ज्ञान–विज्ञान के समस्त क्षेत्रों में (वस्तु व विचार) भाव–कल्पना–निरपेक्ष, निश्पक्ष या तटस्थ वैज्ञानिक चिंतन–प्रक्रिया ही स्वीकृत हुई, जो सत्यानुसंधान के लिए आवश्यक है। हाँ, यह बात दूसरी है कि जीवन में सब कुछ वैज्ञानिक बुद्धि से ही प्राप्त नहीं हो सकता–''नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो ने मेधया न बहुना श्रुतेन''– (कठोपनिशद्)। भारतीय चिंतन के अनुसार विज्ञानमय कोश से आनंदमय कोश उच्च कहा गया है। वैज्ञानिक प्रक्रिया और व्यवहार–बुद्धि, इस धारणा के अनुसार, कदाचित् जीवन में पूर्ण आनंद की प्राप्ति नहीं करा सकती। पूर्ण ज्ञान श्रद्धा से ही प्राप्त होता है, जो है तो सूक्ष्म बुद्धि से ही साध्य, किंतु उसमें जीवन की सूक्ष्म–अदृश्य शक्तियों के प्रति विश्वास भी निहित है–'' श्रद्धावान् लभते ज्ञानं मत्परः संयतेन्द्रियः।''–(गीता) हाँ, तो जीवन में बुद्धि का ही सबसे बड़ा महत्व स्वीकृत हुआ।

निरूद्देश्य क्रिया ही गति है, और सोद्देश्य क्रिया ही प्रगति। किंतु सोद्देश्यता का अनुमापक क्या है ? वह अनुमापक है मानव की पूर्णता, आत्म–कल्याण अथवा लोक–कल्याण। विवेकषील मानव के लिए इस सोद्देश्यता को स्वीकार करना अनिवार्य है। अतः प्रगति का अर्थ हुआ– लोक–कल्याण या लोक–कल्याण के उद्देश्य से की जाने वाली कोई विशिष्ट क्रिया,– ऐसी विशिष्ट क्रिया जो शरीर, मन या आत्मा के सहयोग से ही संभव है; इनमें से केवल एक से ही नहीं। फिर, यह क्रिया मानव–मात्र के लिए अभिष्ट है, क्योंकि ऐसे उच्च उद्देश्य को सामने रखने वाले मानव की ही आत्मा विष्व–व्यापक हो सकती है; देश–काल तक ही सीमित नहीं

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2021
Impact Factor:6.3
Subject: Humanities

रह जाना चाहती। जिस अनुपात में यह क्रिया मानव–मात्र के लिए होगी उसी अनुपात में प्रगति सार्थक होगी। अतः प्रगति की मूल भावना हुई– मानव मात्र का (कोई विशिष्ट देश, जाति या वर्ग का नहीं) समग्र (शारीरिक, मानसिक व आत्मिक) विकास। इससे बढ़कर काव्य का लक्ष्य हो भी क्या सकता है ? भारतीय काव्य का जो भी उद्देश्य रखा गया है, वह ले–देकर यहीं पहुँचता है। अस्तु। चिंतन के लिए प्रगति की इस व्यापक भावना को हम एक क्षण के लिए भी नहीं छोड़ सकते। जीवन की इतर समस्त साधना–पद्धतियों में हम उनके साधकों को इसी एक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए निरंतर गतिशील या प्रगतिशील पाते हैं। इस लक्ष्य की प्राप्ति के प्रयत्न में ही प्रगति की उत्तरोत्तर विकासशीलता की कल्पना की जा सकती है। यह प्रगति कर्म, भावना, बुद्धि या इन तीनों के सम्मिलित प्रयत्न से ही हो सकती है। काव्य–साधना का भी यही लक्ष्य है–अर्थात्, मानव की पूर्णता की प्राप्ति के लिए शब्द अथवा वाणी द्वारा जीवन की सर्वांगीण प्रगति। वह इस लक्ष्य को भाव और कल्पना के माध्यम से प्राप्त करती है। हम हिन्दी को ही लें। पिछले एक हजार वर्शों से हिन्दी की काव्य–चेतना देश–काल की विशिष्ट परिस्थितियों के बीच इसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए निरंतर संघर्श करती आई है। कबीर, जायसी, सूर, तुलसी, घनानन्द, मीरा, भारतेन्दु, मैथिलीशरण गुप्त, 'प्रसाद', पंत, 'निराला', महादेवी आदि कवि उसी लक्ष्य के प्रगतिशील कवि हैं, अतः साहित्य में प्रगति निरन्तर होती चली जा रही है, यह माना जायगा। काव्य–क्षेत्र में प्रगति का व्यापक अर्थ केवल एक ही हो सकता है– भाव–द्वारा मानव–जीवन की पूर्णता की अनुभूति, और उसकी अभिव्यक्ति। प्रगति के इस अर्थ की सीमायें जितनी ही छोटी की जायँगी, वह काव्य उतना ही संकुचित, साम्प्रदायिक तथा एकदेशीय कहा जायगा। इस दृष्टि से काव्य की किसी धारा–विशेष को ही प्रगतिवादी धारा आदि नामों से अभिहित करना मलतः भ्रामक है। जीवन व साहित्य (प्राकृतिक विकासवाद के सिद्धान्त के अनुसार) सदा की प्रगतिशील रहे हैं। अतः 'सामाजिक चेतना' व 'अन्तर्मन' की अभिव्यक्ति करने वाले कवियों के लिए ही 'प्रगति' अथवा 'प्रगतिवादी' शब्दों का प्रयोग करना सु–संगत नहीं जान पड़ता।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2021
Impact Factor:6.3
Subject: Humanities

निराला के काव्य–वस्तु और शैली का घनिष्टतम संबंध है। विचारों या भावों की प्रगति तदनुकूल साहित्यिक शैली–शिल्प की भी अपेक्षा करती है। कौन कवि आज तक अपनी अभिव्यक्ति से पूर्ण संतुष्ट हुआ है ? विचारोत्कर्ष या भावोद्रेक के अनुरूप किस ने पूर्ण सफल अभिव्यक्ति पा ली ? पूर्णता के लिए मानवीय प्रयत्न के चरण सदा थिरकते रहे हैं। युग–युग से कवि नित–नव प्रयोग करते चले जा रहे हैं। अलंकार, भाषा, छंद आदि के सहस्त्र–सहस्त्र प्रयोग अभिव्यक्ति की पूर्णता या सफलता को प्राप्त कर लेने की अविराम चेश्टा द्योतक हैं।

निष्कर्ष

कहा जा सकता है कि कवि की सौंदर्य–दृष्टि मानव व प्रकृति, दोनों ही क्षेत्रों में पहुँची दिखाई पड़ती है; प्राकृतिक सौंदर्य के प्रति कदाचित्, कुछ अधिक उद्दीपन, दृश्य–चित्रण, वातावरण–निर्माण, अलंकार–विधान व प्रतीक–स्थापन आदि की दृष्टि से नवीन कविता में प्रकृति का बहुत समावेष है। निराला जी ने प्रेम और सौंदर्य को आत्मपरक दृष्टि से वर्णित करके उसके मार्मिक स्वरूप का उद्घाटन किया। वस्तु और शिल्प का मणि कांचन संयोग करके उन्होंने प्रेम और सौंदर्य वर्णन को चरमोत्कर्श तक पहुँचाया। दूसरे शब्दों में, छायावादी कविता का यह सबसे समृद्ध पक्ष है।एक चित्र, एक वातावरण, एक संवेदना या क्षण–विशेष की मनःस्थिति को अंकित करने में इन कवियों का कौशल अच्छा दिखाई पड़ता है। रीति–कालीन षट्–ऋतु–वर्णन या बारहमासा आदि के रूप में प्रकृति का वर्णन तो कहीं नहीं दिखाई पड़ता।

Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, hereby, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patent or anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website/amendments /updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally I have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and the entire content is genuinely mine. If any issue arise related to Plagiarism / Guide Name / Educational Qualification / Designation/Address of my university/college/institution/ Structure or Formatting/ Resubmission / Submission /Copyright /

ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2021
Impact Factor:6.3
Subject: Humanities

Patent/ Submission for any higher degree or Job/ Primary Data/ Secondary Data Issues, I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the data base due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Aadhar/Driving License/Any Identity Proof and Address Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper may be rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper may be removed from the website or the watermark of remark/actuality may be mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me.

हरविंदर कौर

प्रो. (डॉ) संजू झा

*****